पशु चिकित्सा जन स्वास्थ्य एवं महामारी विज्ञान विभाग
लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार

अफ्लाटॉक्सिन जहर से मुर्गियों का बचाव

मुर्गी के दाने में जहर कैसे आता है?

- जब दाना या दाने के विभिन्न अवयव सीलनभरी जगह में इकट्ठे किये जाते है तो फफूंदी उनमे अच्छी तरह से उगती है एवं इस जहर को पैदा करती है।
- फफूंदी की बढ़ोतरी 30डिग्री सेन्टीग्रेड तापमान एवं 80 प्रतिशत नमी पर सर्वाधिक होती है।
- इन फफूंदियों के कारण मक्का, मूंगफली, चावल, सोयाबीन, जौ, गेहूँ आदि दाने या तैयार मुर्गी आहार प्रभावित हो सकते है।

अफ्लाटॉक्सिन जहर का प्रभाव

चूजों की बढ़ोतरी का कम होना

चूजों का वजन कम होना

अण्डा देने वाली मुर्गियों में
अण्डों के उत्पादन का कम होना

अण्डों से चूजो के निकलने की क्षमता
व दर/हैचिंग कम होना

मुर्गियों / चूजों में मृत्यु दर का बढ़ना

बचाव

- दाने में प्रयुक्त विभिन्न अवयवों को अच्छी तरह सुखा कर रखें एवं प्रयोग करें।
- दाना या उसके अवयव नमी वाले स्थान पर इकटठ्ा न करें।
- दाना हमेशा नया या ताजा बनाया हुआ खरीदें।
- दाना या उसके अवयव अधिक समय के लिए इकट्ठा न करें।
- अलग-अलग लॉट के दाने का परीक्षण अलग-अलग करवायें।
- मुगियों को खिलाने से पहले दाने की जांच अवश्य करवायें।

इसकी पहचान कैसे करवायें

- दाने के साथ एक या दो प्रभावित मुर्गियाँ (मरी या जीवित) भी भेजें जिससे निदान करने में सुविधा हो।
- जो दाना आप मुगियों को दे रहे है उसमें से अच्छी तरह मिला हुआ लगभग 200-300 ग्राम दाना विष विज्ञान प्रयोगशाला, पशु चिकित्सा जन स्वास्थ्य एवं महामारी विज्ञान विभाग को भेज कर जाँच करवायें।